प्रभावी रणनीतियों के माध्यम से प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में समावेशन को बढ़ावा देना

अरुणा ज्योति

शिक्षा के क्षेत्र में आज हम पहले की तुलना में बहुत अधिक बदलाव देख रहे हैं। बहुसांस्कृतिक विविधता, विद्यार्थी विविधता, तेज़ी-से होते सामाजिक और तकनीकी परिवर्तन, माता-पिता की उच्च अपेक्षाएँ और आकांक्षाएँ, मानव अधिगम पर नए संज्ञानात्मक शोध आदि के कारण कक्षाओं की प्रकृति कहीं अधिक गतिशील हो रही है। अर्थात 'सार्वजनिक स्कूलों में विद्यार्थियों की अधिक से अधिक विविधता अपवाद के बजाय आदर्श का प्रतिनिधित्व करती है'(गोलनिक और चिन, 2009)।

अपने देश में जाति, वर्ग, पन्थ, धर्म, लिंग, बोली जाने वाली भाषाओं में अन्तर जैसी विविधता को देखते हुए, बहुत कम विद्यार्थी ऐसे हैं जो ठेठ या तथाकथित सामान्य विद्यार्थी के साँचे में फिट होते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों (जैसे कि श्रवण बाधित, दृष्टि बाधित, बौद्धिक अक्षमता, स्वलीनता, स्वास्थ्य बाधित, अधिगम की अक्षमता वाले बच्चे आदि) के अलावा स्कूलों में तेज़ी-से ऐसे बच्चे आ रहे हैं जिन पर विशेष ज़रूरतों के अलावा अन्य कारणों से भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पड़ रही है। 'इन सभी विविधताओं को एक साथ देखें तो हम लगभग 20-30 प्रतिशत बच्चों के बारे में निरापद रूप से यह कह सकते हैं कि कक्षा में उनकी कुछ विशेष आवश्यकताएँ या अपेक्षाएँ होंगी'(बार्र और पैरेट, 2001, टॉम ई.सी. स्मिथ, एडवर्ड ए. पोलोवे, जेम्स आर. पैटन, कैरोल ए. डॉडी)।

तो फिर कक्षा में शिक्षक के लिए इसके क्या मायने हैं? शिक्षकों को ऐसे विद्यार्थियों, जिनमें विकलांग बच्चे भी शामिल हैं, की पहचान करने में सक्षम होना चाहिए, उनकी पृष्ठभूमि को समझना चाहिए और उन्हें समायोजित करना चाहिए और इसके बाद इन सभी विद्यार्थियों को जिस तरह की सेवाएँ चाहिए उनका पता लगाना चाहिए। ज़ाहिर है कि यह सब कहना, करने की तुलना में आसान है। बावजूद इसके बहुत-से विकलांग बच्चों के लिए यह सम्भव है कि वे शिक्षा की सामान्य कक्षाओं में नियमित विषय के शिक्षकों से अपनी शिक्षा का कुछ भाग प्राप्त कर सकें। इसका अर्थ यह हुआ कि शिक्षक को तथाकथित सामान्य बच्चों के साथ-साथ विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों को भी तब तक वैसा ही अनुभव प्रदान करना चाहिए जब तक कि उनकी आवश्यकताओं को नियमित कक्षा में पूरा न किया जा सके क्योंकि आवश्यकताएँ बहुत विशिष्ट हैं या विकलांगता गम्भीर है। नियमित कक्षा के बाहर विकलांग बच्चों को पढ़ाने के लिए एक अलग व्यवस्था करने का निर्णय लेने से पहले शिक्षकों को विभिन्न सामग्रियों जैसे दृश्य सहायक सामग्री, पूरक सामग्री आदि का उपयोग करके विभिन्न विकल्पों का पता लगाना चाहिए।

भारत में समावेशी शिक्षा अभी विकासशील अवस्था में है और फिलहाल इसके अच्छे अभ्यासों की पहचान करना आसान नहीं है। अपनी विविधता के बावजूद, भारत को सांस्कृतिक, धार्मिक, लैंगिक और अन्य विभिन्नताओं को स्वीकार करने की दिशा में अभी काफ़ी प्रगति करनी है, विकलांगता का स्वीकरण तो दूर की बात है। जब स्कूलों की बात आती है तो यह बात महत्वपूर्ण हो जाती है कि सभी हितधारक यानी माता-पिता, शिक्षक और बच्चे विभिन्न आवश्यकताओं वाले बच्चों को स्वीकार करने का दृष्टिकोण विकसित करें।

'समावेशन के लिए यह ज़रूरी है कि शिक्षक इसके लिए अपेक्षित कौशल विकसित करें और सामग्री को संशोधित करने के तरीक़े सीखें, खुले दिमाग़ से विभिन्न तरीक़ों को अपनाने की कोशिश करें तथा विषयवस्तु व मूल्यांकन को बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप संशोधित करें' (टॉम ई.सी. स्मिथ, एडवर्ड ए. पोलोवे, जेम्स आर. पैटन, कैरोल ए. डॉडी)।

अलग-अलग निर्देशों के पालन की सहूलियत अभी हमारे स्कूलों में नहीं है। फ़िलहाल हमारी शिक्षा-प्रणाली इसी बात में विश्वास करती है कि सभी परिस्थितियों में एक ही दृष्टिकोण को उपयुक्त मानकर उसका ही प्रयोग किया जाए। हम यह आशा और प्रार्थना करते हैं कि बेहतरीन दृष्टिकोण अपनाया जाए।

लेकिन इसकी बजाय क्या हम एक शिक्षक के रूप में ख़ुद से यह पूछ सकते हैं कि क्या हम अपनी कक्षाओं में इस तरह की विविधता को अपनाने के लिए तैयार हैं?

तैयार होना

तैयार होने का क्या मतलब है? ऐसी विविधता का सामना करने के लिए शिक्षकों को कैसे तैयार किया जाए?

प्रारम्भिक हस्तक्षेप का महत्त्व प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा के समान है : पार-गोलार्ध हस्तान्तरण[1] में संवेदी

[1] न्यूरोसाइंस में मस्तिष्क को दो गोलार्धों में बाँटा जाता है – दायाँ गोलार्ध व बायाँ गोलार्ध। दायाँ गोलार्ध शरीर के बाईं ओर के अंगों को नियन्त्रित करता है और बायाँ गोलार्ध शरीर के दाईं ओर के अंगों को। पार-गोलार्ध हस्तान्तरण से आशय है इन दोनों गोलार्धों के बीच हस्तान्तरण। - सम्पादक

प्रसंस्करण और उद्दीपन व अभ्यास सूचना के आदान-प्रदान की गति का ध्यान रखते हैं तथा उसे बनाए रखने में मदद करते हैं। सूचना के आदान-प्रदान की यह गति किसी भी क्रिया के लिए एक महत्वपूर्ण पैरामीटर है। इसलिए गुणवत्तापूर्ण कार्यक्रम के रूप में अर्हता प्राप्त करने के लिए कुछ बुनियादी आयु-उपयुक्त अभ्यासों को अपनाया जाना चाहिए। प्रारम्भिक वर्षों के कार्यक्रमों को विकास के सम्बन्ध में भी उपयुक्त होना चाहिए।

यह कार्यक्रम अन्तःक्रियात्मक-सक्रिय अधिगम (इंटरएक्टिव-एक्टिव लर्निंग) वाले हों : इस योजना को बच्चों की ज़रूरतों को यथासम्भव पूरा करना चाहिए और सामाजिक विकास पर ध्यान देना चाहिए। शिक्षकों को माता-पिता/परिवार के सदस्यों के साथ समन्वय और सहयोग करना चाहिए। इस तरह के अभ्यासों से बच्चों को दूसरी कक्षा तक और शायद पाँचवीं कक्षा तक भी हर तरह से फ़ायदा होगा और स्थिति के अनुसार प्राथमिक स्कूल से आगे भी इसका लाभ मिल सकता है।

कई शिक्षक गतिविधि-आधारित अधिगम का अभ्यास करते हैं, जिसमें बच्चों को खेल, एक्शन गीत और कविताओं के माध्यम से शारीरिक गतियों के बहुत सारे अभ्यास करवाए जाते हैं। यदि शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (Children with Special Needs - सीडब्ल्यूएसएन) के साथ कार्य करने के ज्ञान के साथ ही उद्देश्य भी निर्धारित कर लें तो ये गतिविधियाँ सार्थक और उद्देश्यपूर्ण बन सकती हैं। फिर वे बच्चों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ध्यानपूर्वक योजना बनाने और काम करने में सक्षम होंगे।

इस दिशा में आगे बढ़ने के तरीक़ों पर कुछ विचार

यदि शिक्षकों को संवेदी उद्दीपन की आवश्यकता के बारे में पता है, विशेष रूप से स्वलीन और दृश्य बाधित बच्चों के लिए, तो वे प्रघाण उद्दीपन (vestibular stimulation) के लिए गतिविधियों की योजना बना सकते हैं। हमारे शरीर और हमारे पर्यावरण के बारे में जानकारी देने के लिए हमारी सभी इन्द्रियाँ एक साथ काम करती हैं। लेकिन जब कोई चीज़ 'ठीक' (चाहे दृष्टि या श्रवण बाधा या स्नायविक विकारों के कारण) से काम नहीं कर रही हो तो पूरे तंत्र में ख़राबी आ सकती है। इससे पता चलता कि दृष्टि दोष वाले बच्चे बैठे-बैठे अपने शरीर को आगे-पीछे क्यों झुलाते रहना चाहते हैं, जिसे अकसर स्व-उद्दीपन के रूप में सन्दर्भित किया जाता है। हो सकता है कि वे कुछ ऐसी प्रघाण जानकारी भरने की कोशिश कर रहे हों जो उनके दिमाग़ में नहीं है।

नीचे कुछ गतिविधियों के उद्देश्यों का उल्लेख किया गया है जो स्कूल के शिक्षण के दौरान हुए मेरे अनुभवों पर आधारित हैं। शिक्षकों को उन उद्देश्यों और गतिविधियों के बीच जुड़ाव/सह-सम्बन्धों का पता लगाना होगा जिनका आनन्द सभी बच्चे ले सकें और जो उनकी ज़रूरतों को पूरा कर सकें।

1. प्रघाण इनपुट बहुत ही शक्तिशाली होता है और इसके अद्भुत प्रभाव हो सकते हैं। प्रघाण प्रसंस्करण, यक़ीनन किसी भी अन्य संवेदी तंत्र की तुलना में, लगभग हमारे हर कार्य में सदा काम करते हैं और सही ढंग से उपयोग किए जाने पर प्रघाण गतिविधियों में एक बच्चे को शान्त करने और आराम पहुँचाने की क्षमता होती है और साथ ही साथ इससे विकास के कई पहलुओं जैसे समन्वयन, लिखावट, अवधान और यहाँ तक कि पढ़ने में भी सुधार होता है।

उदाहरण

- रो, रो, रो योर बोट जेंटली डाउन द स्ट्रीम, कविता का रोल प्ले करवाएँ। बच्चों से से कहें कि वे एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर इस तरह से आगे और पीछे की ओर ले जाएँ जैसे कि वे नाव खे रहे हों- ऐसा वे बैठकर, खड़े होकर, तेज़-तेज़, धीमे या पीठ के बल लेटे हुए भी कर सकते हैं। उनसे कहें कि वे अपने घुटनों को मोड़कर उन्हें पकड़ें तथा दाएँ-बाएँ व आगे-पीछे की ओर झूलें।
- ट्रम्पोलिन, स्प्रिंग बोर्ड, जम्पिंग जैक : आज कौन जम्पिंग जैक बनना चाहता है? (बच्चों को गिरने से बचाने के लिए आप आसपास ही रहें।)
- दाएँ से बाएँ ओर झूलना : बच्चों को एक-दूसरे का हाथ पकड़कर रॉक-अ-बाय-बेबी कविता पर दाएँ से बाएँ झूलने को कहें।
- हवाई जहाज़ : उन्हें अपने हाथों को फैलाकर हवाई जहाज़ की तरह आवाज़ निकालते हुए दौड़ने को कहें। उन्हें अपने चेहरे पर हवा महसूस करने के लिए कहें।
- गर्दन और पीठ के लिए हलकी लचीली गतिविधियाँ करवाएँ।

(ऊपर दी हुई लोकप्रिय कविताओं के स्थान पर अन्य कविताएँ भी ली जा सकती हैं।)

2. चलन या गति से सम्बन्धित अभ्यासों पर विचार करें। शिक्षक बच्चों को ऐसी गतिविधियाँ देते हैं, जिनमें बच्चों को बहुत अधिक चलना-फिरना होता है (गतिसंवेदी) जो कि उनके लिए आवश्यक है। लेकिन क्या कुछ गतिविधियाँ ऐसी हो सकती हैं जो सन्तुलन के संवेदन को बेहतर बनाएँ? जैसे कि आँखें बन्द होने पर भी यह बता सकना कि हाथ ऊपर उठाया जा रहा है या पीछे की ओर -यह स्वान्तरग्रहण (proprioception) का एक उदाहरण है, जो पर्यावरण के सम्बन्ध में अपने शरीर के अभिविन्यास (orientation) को महसूस करने की क्षमता है। यह मस्तिष्क के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आत्म-नियमन, समन्वयन, अंग-विन्यास, शरीर सम्बन्धी

जागरूकता, उपस्थित होने और ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता और बोलने में एक बड़ी भूमिका निभाता है। ऐसे उदाहरणों या स्थितियों को याद करने की कोशिश करें जब आपको रोज़ाना या हर पल ध्यान देने की ज़रूरत नहीं पड़ती, जैसे सीढ़ियों पर चढ़ते समय या रास्ते में किसी चीज़ से बचने के लिए आदि। यदि सन्तुलन का संवेदन बिगड़ा हुआ हो तो व्यक्ति अव्यवस्थित और असमन्वित हो सकता है।

सन्तुलन में सुधार के लिए कुछ गतिविधियाँ

- बच्चों को एक पैर पर खड़ा करें (लगता है कि कई लोग ऐसा कर सकते हैं)।
- आँखें बन्द करके भी ऐसा ही करें (इसे वयस्क भी आज़मा सकते हैं)। हमें लगता है कि हममें एकाग्रता की कमी है और हम सन्तुलन खो देते हैं। इसलिए कई लोग एकाग्रता में सुधार के लिए भी ऐसा करने का सुझाव देते हैं।
- आँखें बन्द करके/आँखों पर पट्टी बाँधकर पीछे की ओर चलें।

संज्ञानात्मक क्षमता, दृश्य बोध, श्रवण कौशल विकसित करना

बोर्ड पर अलग-अलग रंगों के नाम अलग-अलग रंगों में लिखें, जैसे लाल को नीले से, नीले को पीले से आदि। बच्चों को रंग की पहचान करनी है न कि शब्द की।

कुछ लोगों को लग सकता है कि ये अभ्यास बच्चों को भ्रमित कर सकते हैं, लेकिन यहाँ बात उनके पठन का आकलन करने की नहीं है, बल्कि पार-गोलार्ध तारों को विकसित करने और तादात्म्य या तुल्यकालन (synchronisation) के अभ्यास की है- जैसे कि पियानो बजाने के लिए दोनों हाथों का उपयोग करना। मुद्दा यह है बच्चों को तरह-तरह के उद्दीपन प्रदान किए जाएँ। आगे चलकर बच्चे को विकसित दृष्टि बोध से बहुत फ़ायदा होगा क्योंकि तब वह नोट्स ले पाएगा और साधारणतया अध्ययन सम्बन्धी सामग्री को बेहतर ढंग से समझेगा।

साइमन सेज़ या साइमन कहता है- कक्षा में खेला जा सकने वाला एक ऐसा प्रभावी खेल है जिसे बच्चे बहुत चाहते हैं। यह खेल सुनने के कौशल के साथ-साथ ध्यान केन्द्रित करने में भी सुधार करता है। शिक्षक बच्चों को निर्देश देते रहते हैं और वे तदनुसार आवश्यक क्रियाएँ करते हैं। उदाहरण के लिए :

साइमन कहता है, अपनी नाक को छुओ।

साइमन कहता है, अपने पैर छुओ।

साइमन कहता है, अपना अँगूठा पकड़ो आदि।

जब 'साइमन कहता है' के बिना निर्देश दिया जाए तो बच्चों को निर्देश का पालन नहीं करना है और क्रिया नहीं करनी है। बच्चे ऐसे खेलों को बहुत पसन्द करते हैं (मुझे यकीन है कि इस खेल के अन्य प्रकार भी होंगे)।

अन्य गतिविधियाँ

लाइन बनाने का अभ्यास करें। बच्चों को रेत में बड़े-बड़े गोले बनाने के लिए कहें। क्रेयॉन का उपयोग करने से पहले आटे, हवा या फिंगर पेंट का उपयोग करें।

दो अलग-अलग थैलों में मिलती-जुलती बुनावट वाले कपड़े रखें। बच्चों से कहें कि वे एक थैले से एक बुनावट वाले कपड़े का चयन करें और दूसरे थैले में से वैसे ही कपड़े का मिलान करें।

बच्चों से इस प्रकार की विभिन्न गतिविधियाँ करने को कहें, जैसे बड़े क़दम उठाना, छोटे क़दम उठाना, बड़ी कूद लगाना, छोटी कूद लगाना, एक लाइन पर चलना, लँगड़ी टाँग खेलना, पंजों के बल चलना, फेंकना, पकड़ना, गेंद को किक मारना, टायर को घुमाते हुए चलाना आदि।

स्व-सहायता कौशल विकसित करने के लिए गतिविधियाँ

ऊपर वर्णित बातों के अलावा सीडब्ल्यूएसएन के लिए स्व-सहायता कौशल विकसित करना बहुत महत्त्वपूर्ण है, हालाँकि यह अन्य बच्चों के लिए भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक बच्चों को सरल कार्य करने के लिए दे सकते हैं, जैसे :

- अपनी-अपनी चीज़ें पैक करना
- नैपकिन या रुमाल का उपयोग करके, शारीरिक रूप से स्वच्छ रहना
- आवश्यकता पड़ने पर गुसलखाने का उपयोग करने के बारे में जानना
- अवकाश के दौरान अन्य बच्चों को फल, जूस इत्यादि परोसने जैसे सरल कार्य करना।

इस तरह के कार्यों का उद्देश्य बच्चों को आत्मनिर्भर होने, दूसरों की मदद करना सीखने और अपनी ज़रूरतों को पहचानने में मदद करना है। इस प्रकार भविष्य में वे स्वतंत्र जीवन और स्व-सहायता के मार्ग पर चल पाएँगे।

अवधान (attention) में सुधार, सीखी गई चीज़ों को याद रखने तथा आँख और हाथ के बीच समन्वय के लिए गतिविधियाँ

यहाँ कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं जो बच्चों को इन कठिनाइयों में मदद कर सकती हैं। इनमें से कुछ गतिविधियाँ एक से अधिक उद्देश्यों की पूर्ति कर सकती हैं। (यहाँ पर इस बात को दोहराना ठीक होगा कि शिक्षकों को पता होना चाहिए कि बच्चों को

इस तरह की गतिविधियाँ क्यों दी जाएँ, सिर्फ़ इसलिए नहीं कि 'छोटी कक्षाओं में ऐसे ही पढ़ाया जाना चाहिए या क्योंकि गतिविधि-आधारित अधिगम में ऐसा ही बताया गया है')।

अवधान में सुधार के लिए

- सुई में धागा डालें (सिलाई किट में प्लास्टिक की सुइयाँ उपलब्ध होती हैं)।
- जेंगा खेल की तरह स्ट्रॉ (तरल पदार्थ पीने वाली नली) को बॉक्स में से बाहर निकालें। सारी स्ट्रॉ को एक बॉक्स में लम्बवत रूप में डालकर उन्हें एक-एक करके इस तरह से निकालें कि दूसरी स्ट्रॉ न हिलें (जो भी सबसे ज़्यादा स्ट्रा निकालता है, वह जीत जाता है और खुश होता है)।
- एक विशिष्ट अक्षर के साथ शुरू होने वाले शब्द सुनने पर ही हाथ उठाएँ।
- शिक्षक लगातार रंग कार्ड दिखाएँ और बच्चे दिखाए गए रंगों पर ध्यानपूर्वक नज़र रखें और बताएँ कि उन्होंने कितने विशिष्ट रंगों को देखा, उदाहरण के लिए लाल।

आँख और हाथ के बीच समन्वय, मांसपेशियों के विकास में सुधार के लिए

- सिलाई - कपड़े पर या चार्ट पेपर पर क्रॉस-स्टिच करें।
- मोतियों, बीजों की छँटाई, उन्हें रंग, आकार आदि के अनुसार वर्गीकृत करें।
- बिन्दीदार रेखाओं या किसी चित्र पर ट्रेस करें।
- बिन्दीदार रेखाओं पर, मुड़ी हुई रेखाओं पर या चित्र के ख़ाके को काटें।

सुनने के कौशल में सुधार के लिए

- ताली की ताल/लय को सुनें और दोहराएँ।
- 'करड़ी टेल्स' सीरीज़ (यदि अभी भी उपलब्ध हो तो यह एक अच्छा स्रोत है) देखें। वर्तमान में लोग बुकबॉक्स वीडियो का उपयोग करते हैं।
- ध्वनि/आवाज़ को सुनें और उस दिशा की ओर इंगित करें जहाँ से वह आई थी।
- आँखें बन्द करके चारों ओर की ध्वनियों (या उत्पन्न ध्वनि) को सुनें और उन्हें पहचानें।

याददाश्त बढ़ाने के लिए

बच्चों से कहें कि वे चित्र-कार्डों को एक अनुक्रम में इस तरह से व्यवस्थित करें कि एक कहानी बन जाए।

किसी कहानी को अपने स्वयं के शब्दों में लेकिन सही अनुक्रम में सुनाने को कहें।

सहपाठियों के नाम बताने को कहें।

कुछ वस्तुओं को बेतरतीब ढंग से एक ट्रे में रखें, बच्चों से एक मिनट के लिए उन्हें देखने को कहें, फिर जितना सम्भव हो उतनी वस्तुओं के नाम अपनी याददाश्त से बताने को कहें।

फिगर ग्राउंड पर्सेप्शन (पृष्ठभूमि से किसी आकृति की पहचान करना)

बच्चों को बड़ी तस्वीर में छोटी तस्वीरें खोजनी चाहिए जैसे कि सामने के पृष्ठ पर दिए गए चित्र में से। इससे उन्हें एक घनी पृष्ठभूमि में से जानकारी के एक विशिष्ट टुकड़े पर ध्यान केन्द्रित करने में मदद मिलेगी। इसी तरह ऑडियो फिगर ग्राउंड संवेदन से बच्चे को शोर भरे वातावरण से आ रही किसी एक ध्वनि या आवाज़ पर ध्यान देने में मदद मिलती है। इस तरह के अभ्यासों से बच्चे को किसी बड़ी व्यवस्था से विशिष्ट चीज़ों का पता लगाने में मदद मिलेगी। पुस्तक, श्यामपट्ट, शब्दकोश, किसी पृष्ठ/पंक्ति में ट्रैक रीडिंग आदि से जानकारी प्राप्त करने के लिए यह अच्छा अभ्यास है।

इस तरह की गतिविधियों की सूची अन्तहीन है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इनका उद्देश्य होना चाहिए, सिर्फ़ सूची पर्याप्त नहीं है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि शिक्षक पाठ्यक्रम/कोर्स द्वारा संचालित होते हैं जिसे उन्हें पूरा करना होता है, लेकिन गुणवत्तापूर्ण शिक्षण की अलग पहचान जिस बात से होती है वह है रणनीति। बच्चों से कैसे सम्पर्क किया जाता है, उन्हें पढ़ाई जाने वाली सामग्री क्या है, बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप अधिगम को लचीला कैसे बनाया जाए, इन सभी बातों से पता चलता है कि शिक्षक चाहते हैं कि बच्चे सीखें और इसके लिए वे थोड़ा अतिरिक्त काम करने के लिए तैयार हैं।

खेल

खेल एक अन्य क्षेत्र है जो शिक्षक को बच्चों को देखने और समझने के बहुत सारे अवसर प्रदान करता है। खेल बच्चों के सम्प्रेषण का सहज माध्यम है। 'बच्चों के लिए अपने अनुभव और भावनाओं को "खेल कर व्यक्त करना" सबसे स्वाभाविक, गतिशील और स्व-उपचार की प्रक्रिया है।' जब कोई बच्चा खेल रहा होता है तो वह शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से उसमें शामिल होता है। यही कारण है कि खेलने का स्थान, जहाँ तक सम्भव हो वास्तविक जीवन की जगह जैसा होना चाहिए और उन्हें हर समय निर्देशित नहीं करना चाहिए। उन्हें विभिन्न प्रकार की सामग्री या किट देना महत्वपूर्ण है ताकि वे अपने आसपास जो कुछ देखते या सीखते हैं, उन्हें इन सामग्रियों की सहायता से खेल सकें- जैसे कि रसोई सेट, डॉक्टर सेट, बढ़ईगिरी, नलसाज़ी, शिक्षक सेट



आदि। 'खेलना बच्चे के लिए वही है, जो वयस्कों के लिए शाब्दिक अभिव्यक्ति है।'

विविधता अपनाने में बच्चों की मदद करें

ध्यान देने वाली बात यह है कि ये सभी गतिविधियाँ कक्षा के सभी बच्चों के लिए समावेशी अभ्यास के रूप में आयोजित की जानी हैं क्योंकि ये सीडब्ल्यूएसएन के लिए अच्छी तरह काम करती हैं। इस तरह के अभ्यास बच्चों को एक-दूसरे को स्वीकार करने, विविधता को गले लगाने और उन्हें एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील बनाने में मदद करेंगे।

जहाँ कहीं भी सम्भव हो वहाँ शिक्षकों को विशेष शिक्षकों के साथ मिलकर काम करना चाहिए। जिन स्कूलों में ऐसे विशेषज्ञ नहीं हैं, वे स्कूल :

- शिक्षण-अधिगम सामग्री बना सकते हैं
- बच्चे के अनुकूल पाठ्यक्रम डिज़ाइन कर सकते हैं
- शिक्षण के तरीक़ों की योजना बना सकते हैं
- आकलन को संशोधित कर सकते हैं

शिक्षकों को माता-पिता और समुदाय को उन्मुख करने, परामर्श देने और मतभेदों को स्वीकार करने के लिए बच्चों को संवेदनशील बनाने के कौशलों से लैस होना चाहिए। सामान्य विषय के शिक्षक प्रशिक्षित होते हैं, किन्तु इसके बावजूद भी दृष्टिकोण या कार्यक्रम को मज़बूत करने के लिए एक मज़बूत समर्थन प्रणाली की आवश्यकता होती है। शिक्षकों को भी चाहिए कि वे, बच्चे जो कुछ जानते हैं, उसे मान्यता देने, सराहने, स्वीकारने और पुरस्कृत करने के प्रति संवेदनशील बनें और बच्चा जहाँ है, अधिगम के जिस स्तर पर है, वहाँ से शुरू करें।

'बच्चों के अधिगम का सुगमीकरण सबसे प्रभावी ढंग से तब होता है जब शिक्षण-अभ्यास, पाठ्यक्रम और अधिगम के वातावरण की कमी पर केन्द्रित होने की बजाय क्षमता पर आधारित होते हैं और प्रत्येक बच्चे के लिए विकासात्मक, सांस्कृतिक और भाषाई रूप से उपयुक्त होते हैं।' अगर हम इस कथन पर ध्यान दें तो हम देख सकते हैं कि किसी भी उम्र के विद्यार्थी के लिए विकास की दृष्टि से उपयुक्त स्थिति का निर्माण करना कितना महत्वपूर्ण है।

पहले की तुलना में अब थोड़ी अधिक जागरूकता के साथ स्कूलों और शिक्षकों को एहसास हो रहा है कि सभी बच्चों को समावेशन का अधिकार है और इसलिए वे दैनिक जीवन की

गतिविधियों में सभी को शामिल करने के तरीक़े खोज रहे हैं। हालाँकि गतिविधियों को खोजने और ऐसे अवसर पैदा करने की चुनौती अभी भी मौजूद है जो सभी बच्चों को उपलब्ध हों और सीडब्ल्यूएसएन के लिए किन्हीं विशेष गतिविधियों को डिज़ाइन न करती हों, ख़ासकर शुरुआती वर्षों में।

'इससे पहले कि बच्चे किसी बात को समझ सकें, उन्हें उसका अनुभव करने की ज़रूरत है... वास्तविक चीजों के साथ प्रयोग करने की ज़रूरत है।'

'उन सामग्रियों को प्राप्त करने में उनकी मदद करें जिनकी उन्हें ज़रूरत है और उनके कार्य का मार्गदर्शन करें लेकिन उन्हें बहुत ज़्यादा न बताएँ...'

'बाद में, स्कूल में बच्चों के पास सिद्धान्त व व्याख्याएँ होंगी ही।' (परिचय, समझ के लिए तैयारी, यूनिसेफ)

संक्षेप में

कक्षा में सभी बच्चों के लिए गतिविधियों की योजना बनानी चाहिए। बच्चों को सीखने, गायन, नृत्य, संगीत, खेल आदि के लिए आयु-उपयुक्त कक्षाओं का हिस्सा होना चाहिए। यद्यपि गतिविधि की योजना बनाने का एक उद्देश्य होना चाहिए लेकिन उसका लक्ष्य भाग लेने वाले बच्चों का आकलन करना नहीं होना चाहिए। इसके पीछे विचार यही है कि बच्चों को भरपूर अवसर दिए जाएँ और उन्हें सीखने दिया जाए। एक संवेदनशील प्रेक्षक को पता चल जाएगा कि बच्चे आवश्यकताओं को पूरा कर रहे हैं या नहीं, और साथ ही यह भी पता चल जाएगा कि हर बच्चे की ज़रूरतें पूरी हो रही हैं या नहीं।

हमें पता होना चाहिए कि सबसे महत्वपूर्ण कौशल या क्षमता कौन-सी है जिसका विकास बच्चे में करना है, विशेष रूप से विकलांग बच्चों के मामले में। उदाहरण के लिए यदि उन्हें सामाजिक कौशल प्रदान करना है तो स्व-सहायता प्राथमिकता है। अतः कृपया यहीं से शुरू करें और इसके माध्यम से अकादमिक अधिगम होने दें। शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को आत्मनिर्भर बनाना होना चाहिए। बच्चों को विभिन्न माध्यमों से मुख्य धारा में लाया जा सकता है, ना कि केवल अकादमिक या विषय को सीखने के माध्यम से। केवल तभी हर बच्चे की ज़रूरतों को पूरा करने का दावा किया जा सकता है। इंडिविज़ुअलाइज्ड एजुकेशन प्रोग्राम (आईईपी) का कोई सन्दर्भ नहीं दिया गया है क्योंकि सारी बात तो सभी के समावेशन की है।

मुझे यकीन है कि यहाँ उल्लिखित खेलों के कई आधुनिक संस्करण अब उपलब्ध हैं। यहाँ उल्लिखित सामग्री व्यक्तिगत अनुभव से सम्बन्धित हैं जिनका उपयोग किया गया था।

References

Judith L. Evans, *Inclusive ECCD: A Fair Start for All Children.* Lead article in the *Coordinators' Notebook,* Issue # 22. 1998.

National Conference, "Every child's Right to Early Childhood Development: Evolving Inclusive Practices." 23-24 November 2018.

Play Therapy, The Art of the Relationship, Garry L. Landreth, Children communicate through play, pg.9).

Portage guide to early interventions/stimulation, David E. Shearer, Chair, The international Portage Association Civitan International Research Centre, University of Alabama at Birmingham, USA.

Preparation for Understanding, helping children to discover order around them – UNICEF.

Play Therapy, The Art of the Relationship, Garry L. Landreth.

Teaching Students with Special Needs in Inclusive Settings, Sixth edition, Tom E C Smith, Edward A. Polloway, James R. Patton, Carol A. Dowdy

---



अरुणा ज्योति अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में प्राध्यापक हैं। उन्हें स्कूल अध्यापिका के रूप में कई वर्षों का अनुभव है। परामर्श और विशेष आवश्यकताओं के विभाग के प्रमुख के रूप में उन्होंने धीमी गति से सीखने वाले शिक्षार्थियों के लिए एक गतिविधि केन्द्र स्थापित किया है। अरुणा वीएचएस अस्पताल, चेन्नई और एसएनईएचए (धीमी गति से सीखने वाले शिक्षार्थियों के लिए एक केन्द्र) में स्वयंसेवक रही हैं। अरुणा अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन स्कूलों की उस टीम में भी रही हैं, जिसने आरम्भ के छह अज़ीम प्रेमजी स्कूल स्थापित किए थे। उन्होंने इन स्कूलों में शिक्षक व्यावसायिक विकास, पाठ्यक्रम विकास, सीसीई, ईसीई, विशेष शिक्षा और किशोरावस्था से सम्बन्धित क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर काम किया है। उनसे aruna.v@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : नलिनी रावल